समकालीन जवाबदेही

समाज, साहित्य एवं संस्कृति
का साझा अभियान

लोक संस्कृति अंक
2022

Scanned with OKEN Scanner

RNI Reference No. 1293217 • Title Code:BIHHIN 11755 • Peer Reviewed/Refreed Journal

समकालीन जवाबदेही

(जून-अगस्त २०२२)

वर्ष-06 अंक-06

लोक संस्कृति अंक

प्रधान संपादक

डा. सुरेन्द्र प्रसाद मिश्र

संपादक

डॉ. सिद्धेश्वर प्रसाद सिंह

अतिथि संपादक

कुमार वीरेन्द्र

Scanned with OKEN Scanner

अनुक्रमणिका

- ❑ प्रधान संरक्षक की कलम से—*अशोक कुमार सिंह / 9*
- ❑ संरक्षक की कलम से—*शंभुनाथ पांडेय / 10*
- ❑ संपादकीय—*डॉ. सुरेन्द्र प्रसाद मिश्र / 12*
- ❑ अतिथि संपादकीय—*कुमार वीरेन्द्र / 14*

लोक-साहित्य व संस्कृति

1. मगही लोकगीतों का सांस्कृतिक अध्ययन—*डॉ. भरत सिंह / 18*
2. वाचिक परम्परा में भोजपुरी अवधी लोक संस्कृति—*डॉ अमित कुमार पांडेय / 27*
3. 21वीं सदी में भोजपुरिया लोक की डगर—*डॉ. धीरेन्द्र प्रताप सिंह / 33*
4. असम के जनजातियों में प्रचलित जन्म संबंधी लोक विश्वास और लोकाचार—*डॉ. मनिका शइकीया / 38*
5. लोक संस्कृति की अवधारणा एवं लोक साहित्य की प्रासंगिकता—*महात्मा पांडेय / 41*
6. भारतीय संस्कार, संस्कृति और शिक्षा—*डॉ. सच्चिदानन्द प्रेमी / 47*
7. संजीव का उपन्यास पुरबी बयार और महेन्द्र मिश्र की लोक-स्वीकार्यता—*डॉ. उर्वशी / 52*
8. भोजपुरी शब्द संपदा, लोकगीत एवं लोकोक्तियाँ—*डॉ. किरण तिवारी / 56*
9. रेत समाधि में लोक-संस्कृति—*डॉ. कामिनी / 65*
10. भारत और अमेरिका की लोक संस्कृति—*डॉ. नम्रता सिंह / 71*
11. लोक संस्कृति में रचे बसे हैं राम और उनकी रामकथा—*डॉ. सुरेंद्र प्रसाद मिश्र / 76*
12. विलुप्त होती लोक संस्कृतियों पर डंक मारता बाजारवाद—*प्रदीप्त प्रीत / 79*
13. भूमण्डलीकरण के दौर में लोक-संस्कृति—*सौरभ कुमार / 83*
14. भोजपुरी-लोक संस्कृति : एक झलक—*डॉ. हनुमान राम / 86*
15. संस्कृति : संस्कृताश्रिता—*धनंजय जयपुरी / 91*
16. लोक-भाषायी सौन्दर्य : मगध परिक्षेत्र—*मोना पांडेय / 95*
17. लोक संस्कृति की अवधारणा—*राकेश कुमार / 96*
18. सासाराम का सांस्कृतिक वैभव—*लालदेव प्रसाद / 99*
19. संस्कृति और न्याय—*दिवाकर पांडेय / 100*
20. महोत्सव : लोक संस्कृति का संपोषक—*सिद्धेश्वर विद्यार्थी / 102*
21. लोक संस्कृति की छाँव में : हमारा गाँव—*सुरेश विद्यार्थी / 104*
22. लोक संस्कृति में वैज्ञानिक सोच—*राम नरेश मिश्र / 106*
23. लोक संस्कृति का आग्रही पंचदेव धाम—*शिवदेव पांडेय / 107*

लोक-कला

24. दम तोड़ती बहुरूपिया लोककला—*डॉ. आशुतोष कुमार सिंह / 109*
25. तेलंगाना की प्राचीन लोककला : ओग्गु कथा—*डॉ. गाजुला राजू / 112*
26. लोकनाट्य कला—*माला कुमारी / 115*

कृषि-संस्कृति

27. कृषि संस्कृति, लोक व्यवहार और घाघ भड्डरी की कहावतें—*प्रो. प्रभाकर सिंह / 117*
28. महुआ का पेड़—*कांतेश कुमार मिश्र / 120*

Scanned with OKEN Scanner

रेत समाधि में लोक-संस्कृति

डॉ. कामिनी

गीतांजलि श्री के उपन्यास 'रेत समाधि' को बुकर पुरस्कार मिलना न केवल हिन्दी जगत अपितु पूरे भारतीय समाज के लिए हर्ष और गौरव का विषय है। जाहिर है इसके बाद इस उपन्यास के पाठकों की संख्या में अच्छी-खासी वृद्धि हुई है। इसके साथ ही आलोचना-प्रत्यालोचना का नया दौर भी शुरू हुआ है।

उपन्यास की शुरुआत में लेखिका कहती हैं कि एक तरह से यह दो औरतों की कहानी है, लेकिन इन दो औरतों के साथ-साथ वे पूरे परिवेश की कहानी कहती चलती हैं। गीतांजलि श्री का यह उपन्यास न केवल अपने शिल्प में अनूठा है, बल्कि अपने कथ्य में भी अलहदा स्वर रखता है। उपन्यास की मुख्य पात्र 80 वर्ष की एक बूढ़ी औरत है, जिसने पति की मृत्यु के बाद अपने-आप को सबसे अलग-थलग कर लिया है। पूरा परिवार उसे उठाने में लगा है, वह उठने को तैयार नहीं, लेकिन एक दिन अचानक वह गायब हो जाती हैं। यहाँ से आगे कहानी कई-कई मोड़ों से गुजरती है। न उठने के दिनों में मानो वह अपनी पुरानी केंचुल को छोड़ने का अभ्यास कर रही थी, क्योंकि जब वह उठती है तो एक नएपन, एक ताजगी के साथ नया जीवन शुरू करती हैं।

हिन्दी साहित्य के हर युग में लोक ने अपनी उपस्थिति दर्ज की है। गीतांजलि श्री का यह उपन्यास इस दृष्टि से महत्वपूर्ण है कि यहाँ लोक और उसकी संस्कृति अपनी पूरी धमक के साथ मौजूद है। वैश्वीकरण के इस दौर में जहाँ निजता का शोर बहुत ज्यादा है, यह कथा लोक की उपस्थिति और उसके महत्व को स्थापित करती है। यूँ तो मोटे तौर पर यह कथा आपको एक औरत की जीवन-गाथा लग सकती है लेकिन अपने विकासक्रम में हर चरण पर लोकगाथाओं के माध्यम से देश-समाज में होने वाले परिवर्तनों को भी रेखांकित करती चलती है। इस तरह से वह किसी एक की गाथा न होकर पूरे परिवेश की कथा है। यहाँ नौकर-चाकर, अड़ोसी-पड़ोसी से लेकर दीवार, दरवाजा, पशु-पक्षी और पौधे भी अपनी पूरी उपस्थिति दर्ज कराते चलते हैं। कहानी के पहले भाग का शीर्षक 'पीठ' है। माँ जो अब पीठ हो गयी है या यूँ कहें कि जिसने पूरे परिवार की तरफ से पीठ कर ली है। एक औरत जिसने अपना पूरा जीवन लोगों की देखभाल में लगा दिया, जब बूढी हुई तो लोगों के लिए उसकी जरुरत चेकबुक से ज्यादा नहीं रही, अब उसने सबसे मुंह मोड़ लिया है, मानो सबसे विरक्ति हो गई हो। इसी पीठ के साथ ही दीवार और दरवाजा भी आते हैं। दीवार जिसने माँ को अपनी तरफ खींच लिया है- 'ऐसी दीवार, जिसकी तरफ अभी अस्सी के इस तरफ की माँ सूत दर सूत बढ़ती जा रही हैं। जो कभी पक्के तौर पर नहीं कहा जा सकता वह ये कि दीवार का उसे अपनी तरफ ऐंचना ज्यादा दम रखता था, या परिवार को पीठ दिखाने की उसकी चाह? बस माँ दीवार की ओर होती गयी और उसकी पीठ अंधी बहरी होती गई और खुद एक दीवार

Scanned with OKEN Scanner

बन गयी, उन्हें अलगाती जो उस कमरे में आते उसे उकसाने फुसलाने कि उठो अम्मा।' माँ पहले पीठ हुईं और फिर कल्पतरु हो गईं।

इसी के साथ एक दरवाजा है- बड़े बेटे के घर का दरवाजा जिसे सबके लिए खुला रहना है। गाँव का कोई व्यक्ति बड़ा सरकारी अफसर है तो पूरा गाँव वहाँ साधिकार वक्त-जरूरत पहुँचता रहता है और इसीलिये दरवाजे को हमेशा खुला रहना है- 'बड़े बेटे के घर का दरवाजा जानता है कि बहरसूरत खुले रहना है और उस के बीच से निकलने वाले पर वक्त की, पूर्वसूचना देने की खटखटा कर घुसने की पाबंदियाँ नहीं हैं। यहाँ सब मुक्त और मुफ्त मामला। आप तौलिया लपेटे गुसल से निकलें और गाँव से कोई रिश्तेदार बीवी बच्चों को लेकर घुसे आ गए हैं सामने तो आप मुस्की मारेंगे और चाय-नाश्ता के लिए चिल्ला देंगे और नंगे बदन पर कपडे चढ़ाएंगे और ये नहीं विचारेंगे कि कितने दिनों तक पाहुने आपके यहाँ आवास धारण करने आये हैं। बेटे की नौकरी, बेटी की मंगनी, किसी का कहीं दाखिला, क्या क्या दुःख सुख लोभ बेचारों को खींच लाया है।' एक ऐसे समय-समाज में जहाँ निजता के नाम पर माँ-बाप को भी घर से बाहर किये जाने का चलन हो याकि परिवार पति-पत्नी और बच्चों तक सिमट आया हो गीतांजलि की कथा में लोक अपनी पूरी धज के साथ शामिल है। माँ भी लोक में एक प्रतीक हो चली है जिसने अपने को मराया-खपाया और उस परिवार को चलाया। इस कहानी की माँ ने भी एक हद तक यही किया, जब बेटी के ऊपर पाबंदियाँ लगीं, माँ ने एक खिडकी ढूँढ़ ली जहाँ से बेटी अपनी मन-मर्जी का जीवन जी पाती। जब बेटी डरी माँ ने उसके डर को खुद ले लिया और उसकी मुस्कान बन गई। जब बेटे को जरुरत थी तब माँ ने उसके सारे दुःख खुद ले लिए और उसे समाज में आगे बढ़ने के लिए मुक्त किया। आज बेटा एक बड़ा सरकारी अफसर है, बेटी के पास उसकी पूरी स्वच्छंदता सुरक्षित है, लेकिन इन सब में माँ ने अपने को भुला दिया था। यह कोई एक माँ नहीं भारतीय समाज की लगभग हर माँ है और शायद इसीलिये उसने अब पीठ कर ली है कि अब सब झंझटों से मुक्ति चाहिए- 'वो थक गई थी, उन के लिए उनकी साँसे सहेजते, उन के एहसासों को महसूसते, उनकी चाहतें, उनकी नफरतें समेटते। वो उन सब से थक चुकी थी और कँपकँपा के दीवार में घुसना चाहती मानो किसी झिरी में कीड़ी सी घुस जाए तो क्या उसकी खुद की साँस चल पड़ेगी ?' चाहे लोक हो या शास्त्र माँ निरी पवित्र वस्तु रही है। माँ का जितना भी महिमामंडन किया गया उसने माँ को न जाने कितने बोझ तले दबा दिया है। माँ के जीवन को बच्चों के साथ इस कदर बांध दिया गया कि उसका कोई निरपेक्ष जीवन बचा ही नहीं। वहीं पिता, पिता होने के बाद भी स्वतंत्र बने रहे। उनकी दुनिया में ज्यादा परिवर्तन नहीं हुआ, अलबत्ता माँ के उपर उनकी जिम्मेदारी भी बनी रही। यह एक आदत थी जो धीरे-धीरे रिवायत बन गई। ऐसी ही न जाने कितनी रिवायतें हमारे समाज में चल रही हैं। यह उपन्यास इस रिवायत से थोड़ी छूट लेने की कोशिश करता है और शायद इसीलिये यहाँ माँ के न उठने से लेकर नई होकर उठने तक की संक्रमण-कथा भी है। गीतांजलि कहती हैं कि कहानियाँ आवारा होती हैं, जब मन चाहा जिधर मुड़ लिया। पूरी की पूरी सभ्यता के बनने की कहानी इसी आदत से रवायत हो जाने की यात्रा है, जैसे स्त्री को दया, ममता, त्याग, करुणा, सहनशीलता जैसे तमाम गुणों से लादे जाने की परंपरा। स्त्री इस परंपरा के बोझ तले दबी रही और अपनी भूमिका माँ, बेटी, पत्नी, बहन इन्हीं में देखती रही। इस कथा में आई बेटी एक तरह से इन भूमिकाओं से अपने को मुक्त करने की कोशिश करती दीखती है लेकिन अंत में माँ मुक्त होती है। मजे की बात यह

Scanned with OKEN Scanner

है कि रिवायत के जो दो अर्थ शब्दकोश में मिलते हैं उनमें से एक परंपरा के सन्दर्भ में है और दूसरा कहावत या लोकोक्ति के रूप में। गीतांजलि इन दोनों को बहुत ही खुबसूरत तरीके से जोड़ती हैं जैसे जब वे गौरेया की कथा कहती हैं तो उसमें दोनों रिवायतें एकमेक हो जाती हैं। लोक की एक कथा जो यह स्पष्ट करती है कि कैसे आदत रिवायत बन गई। यह कथन उसी को और स्पष्ट करता है- 'समझ बड़ा छिजाया हुआ, गाली खाया हुआ शब्द बन गया है। कि उसके मायने हैं मतलब को स्थापित करना, जबकि मायने उसके हैं मतलब को विस्थापित करना।' एक तरह से देखें तो एक ओर यह कहानी उस रिवायत को स्पष्ट करती है और दूसरी ओर उसे तोड़ती भी है। लेखिका अपने कथानक को किसी तरह के बंधन में बाँधने को तैयार नहीं है, इसीलिये यहाँ 80 वर्ष की बूढ़ी माँ सारी सरहदों को पार करने को तैयार है। माँ का पीठ से कल्पतरु में रूपांतरण कहीं न कहीं इस बात की ओर इशारा करता है कि जीवन की वो इच्छाएँ जो अधूरी रह गईं थीं, उन्हें पूरा करने के लिए माँ तैयार हो रही है। हिन्दू धर्मग्रंथों में कल्पतरु एक ऐसा वृक्ष है, जो समुद्रमंथन से निकले चौदह रत्नों में से एक था। एक ऐसा वृक्ष जो सबकी इच्छाओं को पूरा करने वाला है। माँ के कानों में जैसे ही यह आवाज पड़ी कि उसके सामान रखने में इस घर के सदस्यों को दिक्कत हो रही है, वो कल्पतरु बनीं और उन्होंने सारे सामान दान कर दिए। इस तरह से गीतांजलि लोक के मिथकों का सहारा लेकर अपनी कथा को एक नया मोड़ देती हैं।

भारतीय समाज में परिवार का दायरा बहुत बड़ा रहा है, जहाँ आस-पड़ोस के साथ पशु और पक्षी भी शामिल होते हैं। प्रत्येक गाँव में कोई न कोई व्यक्ति इस तरह का होता है जिसकी उपस्थिति विभिन्न परिवारों में घर के सदस्य की तरह ही होती है। वह ज्यादातर एक ऐसा व्यक्ति होता है जो परिवार की सामान्य सीमा से बाहर होता है। ऐसा व्यक्ति जो सभी के सुख-दुःख में हमेशा खड़ा रहने वाला होता है। इस कहानी में रोजी बुआ अर्थात् रजा मास्टर की उपस्थिति इस तरह के चरित्र की याद दिलाती है। रोजी एक किन्नर है, जिसका हमेशा से माँ के घर में आना-जाना रहा है और उम्र के इस पड़ाव पर जब माँ अपने आप को अकेला पाती हैं तो रोजी या रजा ही उसे सबसे करीबी महसूस होते हैं। जब माँ बेटी के घर रहने के लिए आ जाती है और अपने आप को बिलकुल नया बना देने की कोशिश में लगी है तो रोजी उसकी सबसे बड़ी सहायक है। माँ के साथ रोजी का जो रिश्ता है वह निःस्वार्थ है, माँ इसीलिये वहाँ अपने आप को सबसे ज्यादा सुकून में महसूस करती हैं। बेटी के घर में रोजी का आना-जाना केवल रोजी का आना नहीं है बल्कि माँ को नया बनाने और सुंदर बनाने के ढेर सारे नुस्खों का भी आना है। कभी लहसुन की गंध पूरे घर में फैली है, क्योंकि माँ के तिल-मस्सों को हटाने के लिए रोजी ने नया उपाय खोजा है। कभी अचार-पापड़ और बड़ियाँ आई हुई हैं, कभी पौधों की कटाई-छंटाई हो रही है। कभी कपड़ों की कतरने फैली हुई हैं और माँ को साड़ी के झंझट से बचाने के लिए रोजी गाउन बनवा रही है। इतना ही नहीं माँ और रोजी मिलकर पूरी सोसाइटी के उन सभी सामानों से नई चीजें बनाने में लगीं हैं, जो बेकार हो चुकी हैं। बेटी के घर में पूरी सोसाइटी के लोगों का जमावड़ा है, सभी अपने घर के बेकार हो चुके सामानों से नई चीजें बनवाने के लिए आये हुए हैं। यही लोक माँ को नया जीवन देने वाला है। यहाँ माँ अपने आप को निरी गैरजरूरी नहीं पाती बल्कि अपने जीवन में नया और मन-माफिक करने की चाह से भरी हुई है।

Scanned with OKEN Scanner

बालों को झड़ने से बचाने के लिए भी रोजी ने एक तेल दिया है, जिसको माँ रोज नियम से लगा लेती है। उम्र के जिस पड़ाव पर माँ है, उसपर जयादातर घरों में वृद्धजन गैरजरूरी हो जाया करते हैं। हम यह सोचते हैं कि उनको जब समय-समय पर खाना-पानी, चाय-नाश्ता सब दे दिया जा रहा है, सोने-उठने-बैठने की कोई तकलीफ नहीं है तो उन्हें भला और किस बात का कष्ट हो सकता है। जब माँ बड़े के घर में थीं तो बहू का भी यही सोचना था। लेकिन रोजी के रूप में माँ को जो साथी मिलता है वह उसकी जरूरतों तक ही नहीं सोचता बल्कि उनकी इच्छाओं, उनके महत्व को समझने वाला है। बेटी के घर में माँ अपने-आप को ज्यादा स्वच्छंद पाती है, जहाँ वह रोजी के साथ अपनी मर्जी के सारे काम कर सकती है। यहाँ माँ हाशिये से हटकर केंद्र में है। कई बार बेटी को ही झल्लाहट होती है कि उसके घर में ही उसकी कोई मर्जी नहीं। एक तरह से देखें तो यहाँ भूमिकाएँ बदल गई हैं, माँ बेटी बन गई है और बेटी माँ। समाज द्वारा फिट की गई भूमिकाएँ व्यक्तिगत जीवन को जिस जड़ता में बांधती है उससे छूट लेने की कोशिश यहाँ दिखाई पड़ती है, लेकिन यह भी सच है कि छूट लेने का मतलब एकाकी हो जाना नहीं है। इसीलिये माँ यहाँ अपना एक नया लोक बसाती है, जिसमें रोजी के साथ माली, दरजी, गार्ड, नौकरानी सब शामिल हैं। नए तरह की पारिवारिक बनावट ने जिन्हें बाहर कर दिया था, माँ उन सबको वापस ले आती है। इसीलिये वह अब ज्यादा खुश है। रोजी के ऊपर तो माँ को इतना विश्वास है कि जब उसे शिस्ट होता है और पूरा परिवार ऑपरेशन कराने की तैयारी में लगा है, रोजी के दिए नुस्खे से वह स्वयं उस शिस्ट का इलाज कर लेती है। यह लोक द्वारा किया जाने वाला इलाज था। कई बार यह लग सकता है इस वैज्ञानिक युग में गीतांजलि द्वारा इस तरह के देशी नुस्खों को महत्व देना कहाँ तक जायज है, मेरा तो मानना यह है कि साहित्य इतना ब्लैक एंड व्हाइट नहीं होता कि आप उसका इस तरह से मूल्यांकन करें। गीतांजलि के इस उपन्यास में केवल देशी नुस्खों का ही मामला नहीं बल्कि भावनाओं का मामला है। यह एक तरह से पूँजीवादी समाज में देश और समाज के अपने महत्व का भी मामला है। इस उपन्यास की विशेषता है कि यहाँ एक साथ कई-कई चीजें चलती रहती हैं। एक तरफ जहाँ रोजी और माँ के आपसी संबंधों और माँ के रोजी के ऊपर भरोसे की बात है, देशी नुस्खों के सफल होने का मामला है, वहीं चिकित्सा के दिनोंदिन व्यवसाय में तब्दील होते जाने की तरफ भी इशारा है।

गीतांजलि का यह उपन्यास एक ओर लोक परम्परा को स्वीकार करता है और जैसे ही आप उसके आगे की कल्पना करने लगते हैं, कहानी किसी दूसरी ओर मुड़ जाती है। रोजी के जीवन के त्रासद अंत और माँ की पूर्वकथा में रोजी की उपस्थिति ये दोनों प्रसंग कहानी के सम्बन्ध में हमारी बनी-बनाई कल्पना से हमें अलग लेकर चले जाते हैं। जब हम कहते हैं कि लेखिका की दृष्टि बहुत दूर तक फैली हुई है तो मामला यह है कि वह रोजी के माध्यम से एक तरफ लोक जीवन को अभिव्यक्त करती है तो दूसरी तरफ उसकी हत्या की घटना के माध्यम से किन्नर समाज और उसकी तकलीफों को भी उजागर करना चाहती है। रोजी को अपनी जीविका चलाने के लिए रजा मास्टर की भूमिका अख्तियार करनी पड़ती है। उसके गुम होने की सूचना लिखाने गई माँ-बेटी से पुलिस वाले का व्यवहार और किन्नर-जीवन के बारे में की गई टिप्पणी के माध्यम से लेखिका भारतीय समाज की उनके प्रति मानसिकता को भी उजागर करना चाहती है।

इस उपन्यास में लोक जीवन का एक और विस्तृत स्वरूप कौवों के प्रसंग में देखा जा सकता है। हमारे यहाँ प्राचीन काल से कौवे का मुंडेर पर बैठकर बोलना किसी मेहमान के आगमन का

Scanned with OKEN Scanner

सन्देश माना जाता रहा है। लोक कथाओं में नायक-नायिकाओं के मध्य सन्देश के आदान-प्रदान में पक्षियों का बड़ा महत्वपूर्ण स्थान रहा है, जैसे पद्मावत में तोता हीरामन था। तुलसी के 'रामचरितमानस' में भी जब राम सीता को खोजने जाते हैं तो खग-मृग सभी से सीता का पता पूछते हैं। गिद्धराज जटायु और उसका भाई सम्पाती भी सीता की खोज में राम के सहायक बनते हैं, लेकिन यह तो तब की कथा थी जब पशु-पक्षी क्या पूरी की पूरी प्रकृति ही हमारे जीवन में शामिल थी। जब से मानव विकास की नयी गाथा लिखने में लगा, प्रकृति और पशु-पक्षी उससे दूर होते गए। यहाँ कौवों की इंट्री जिस जबरदस्त ढंग से कराई गई है उससे स्पष्ट है कि गीतांजलि लोकसंस्कृति के प्रति भी आसक्त हैं और विकास के नाम पर हो रहे विनाश को लेकर मुस्तैद भी हैं। तभी तो कौवों की मीटिंग का विषय है- विज्ञान के नाम पर प्रदूषण फैलाने वाली तरक्की। 'कौवों की मीटिंग चल रही थी। बदलते मौसमों और विज्ञान-परस्त इंसान द्वारा उन पर कहरती परेशानियों को लेकर। मार कांव-कांव हुई थी और पर्यावरण प्रेमी परिंदों ने लिखित भाषण पंख के नीचे से निकाल कर पढ़े। जो बहुत सिद्धहस्त थे उन्होंने बिना पढ़े धाराप्रवाह प्रवचन दिए कि तभी बेपरों वाला बेपरवाह जीव उनकी गतिविधियों में खलल डालने आन पहुँचा।' इस तरह से जब बड़े ने कौवों की मीटिंग में बाधा पहुँचाई तो कौवे बिगड़ गए। कौवों के बीच अनेक प्रकार से बड़े से बदला लेने को लेकर बहस छिड़ गई। इस पर एक फेमिनिस्ट कौवी ने उन्हें समझाया, शांत कराया और उन्हें बड़े की मानसिक स्थिति से अवगत कराने का प्रयास किया- 'प्यारे बच्चों ऐसे न बनो कि कौवा शैतान का पर्याय बने। नर्म हो जाओ। हिमपात की तरह अम्बर से बरसो कि तुम्हारे फायों पर संसार बिछ जाए। दिल से देखो न कि अकड़ से। देखो वो दुपाया कुछ तो नहीं कर रहा तुम्हारे खिलाफ। वो किसी गहरे दुःख में है, उधर देखता, उस घर के भीतर। शायद उसका कोई प्रियजन खो गया है। हो सकता है वो उसकी माँ है जो वहाँ से उसे नहीं देख रही।' कौवी के इस तरह से समझाने के बाद जो सबसे ढीठ कौवा था वो सबसे समझदार बन गया और बड़े के दुःख में शामिल हो गया। जब माँ गिरीं तो यही कौवा सबसे पहले बड़े के पास सन्देश लेकर पहुँचा। फिर तो धीरे-धीरे उसकी बड़े से दोस्ती हो गई और जब माँ पकिस्तान गईं तब उनका हाल-पता लेने वहाँ तक उड़ चला। जब माँ-बेटी पाकिस्तान की जेल में कैद थे तब भी यह कौवा लगातार उनके साथ बना रहा, माँ जब जेल की क्यारियों में निराई-गुनाई करतीं, तब यह हर समय वहीं रहता। जब माँ रात के साए में चुपचाप अपने प्रेमी से मिलने चलीं तो भी कौवे ने साथ नहीं छोड़ा और चन्दा-अनवर की प्रेम-कहानी का गवाह भी बना और माँ की मृत्यु का भी। वहीं उसकी दोस्ती तीतर से हुई, जिसको वह अपना मुल्क दिखाना चाहता था लेकिन इतनी दूर की उड़ान वह तीतर न भर सका और रास्ते में ही उसकी मृत्यु हो गई। अंत में मानो इस उपन्यास का सार भी कौवे के मुख से ही निकला है- 'पर ये तो बताओ उम्र के आखिरी पड़ाव पर इच्छाएँ क्यों मृत हो जानी चाहिए? उस समय किसी को विश्व भ्रमण का ख्वाब सवार हो, कोई जबान सीखने का शौक चर्राए, पाकविद्या या कोई विद्या में महारथ पाने का जज्बा जागे, तो क्या ये कहना चाहिए कि अब इस हुनर से क्या मिलेगा तुम्हें? कि उसकी इस लालसा का मान करना चाहिए? भले ही इसमें उसकी सांस उखड़े और उखड़ ही जाए। सुख से सोयेगा कि नहीं?' इस तरह से लोककथाओं से निकला कौवा इस उपन्यास में अपनी ठीक-ठाक जगह रखता है।

लोक की वह संस्कृति जो साहित्य से भी गायब हो रही थी, यह उपन्यास उसे फिर से स्थापित सा करता दिखाई पड़ता है। जाहिर है इस उपन्यास की मुख्य विषयवस्तु बूढ़ी माँ की कथा है लेकिन

Scanned with OKEN Scanner

उसके इर्द-गिर्द आये लोक को नजरअंदाज कर पाना संभव नहीं है। कथा को जहाँ भी नया मोड़ मिला है उसके पीछे कोई लोकगाथा, कोई लोकप्रतीक या यूँ कहे कि लोक की मौजूदगी रही है। इसी के माध्यम से लेखिका घर-परिवार से लेकर देश-समाज तक की समस्याओं की ओर इशारा करती चलती हैं। गौरेया की कथा के माध्यम से वे एक ओर आदत के रिवायत बनने की ओर इशारा करती हैं, वहीं दूसरी ओर पर्यावरण के विनाश में मनुष्य की लालची प्रवृति को भी रेखांकित करती हैं। लोक इसीलिये महत्वपूर्ण है क्योंकि वह नितांत आत्मकेंद्रित नहीं है। वहाँ सब के सुख-दुःख में सब शामिल हैं, मनुष्य भी और पशु-पक्षी भी। आज के पूंजीवादी युग में जिस तरह से डिप्रेशन जैसी बीमारी महामारी की तरह फैल रही है उसके पीछे आधुनिक जीवनशैली एक बड़ा कारण है। स्वतंत्रता और निजता के नाम पर अपने आप को समाज से काट लेना हमें इसी ओर ले जा सकता है बड़े की लंच पार्टी में बाटी-चोखे के स्टॉल के पास घिरी भीड़ को लेकर वे कटाक्ष करती हैं- 'सबसे घनी भीड़ वहीं घिरी है और कैसे न घिरती, इन जड़ों से कटे, वंचित शहरियों की ?' छोटे बेटे का जिक्र भी शायद इसीलिए आया कि देश-दुनिया की चिंता में वह ऐसा खोया कि उसने आस-पास के वातावरण को भुला दिया और इसीलिए उसकी हँसी खो गई है। हम अपने आस-पास भी ऐसे लोगों को देख सकते हैं जिन्होंने बौद्धिकता को ऐसा ओढ़ा कि उनकी सहजता गायब हो गई। उपन्यास पढ़ते हुए लगता है जैसे लेखिका इस एक उपन्यास में बहुत कुछ कह देना चाहती है, परिवार, लोक, देश, दुनिया, विकास की विनाशलीला, पर्यावरण, स्त्री, वृद्ध, किन्नर सबकी समस्या को एक-साथ समेट लेने की आकांक्षा में कहीं-कहीं बहुत ज्यादा फैलाव हो जाता है। दरअसल वर्तमान समय की जो स्थितियां है, उसमें चुनौती विविध स्तरों पर है और केवल एक सीधी कथा लेकर चलना किसी भी कथाकार के लिए आसान नहीं है।

सम्पर्क : लेखिका प्रखर वक्ता और गंभीर उध्येता हैं। सम्प्रति- सहायक प्राध्यापक (हिन्दी), राजीव गाँधी शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अंबिकापुर, छत्तीसगढ़, मो. 8120094808

Scanned with OKEN Scanner